Champaran important in ancient time

चम्पारण का महत्त्व प्राचीन काल में

SHYAM KUMAR

इतिहास

चम्पारण वर्तमान में बिहार राज्य में स्थित है। जहाँ पुरातात्विक साक्ष्य के साथ–साथ साहित्यिक विवरण भी मिले हैं। ये दोनों साक्ष्य मिलकर चम्पारण के समृद्ध इतिहास का बोध कराते हैं।

शतपथ ब्राह्मण में विदेह माधव के बारे में वर्णन है जिसमें कहा गया है कि विदेह माधव ने वैश्वानर अग्नि को मुख्य में धारण किया था तथा धृत का नाम लेते ही वह अग्नि मुख्य से निकलकर पृथ्वी पर आ गया और वनों के साथ – साथ नदियों को जलाता हुआ पूर्व की ओर बढ़ गया लेकिन उत्तरगिरि (हिमालय) से बहने वाली सदानीरा नदी को नहीं जला पाया। सदानीरा नदी की पहचान आज के गंडक (गंडकी) नदी से की जाती है जो चम्पारण जिला के पश्चिम में प्रवाहित होती है।

आर्यो का निवास स्थल उत्तरवैदिक काल में गंडक नदी के पूर्व में था। जिसे आर्य ब्रात्य क्षेत्र भी कहते हैं। आज आधुनिक समय में गंडक नदी के पूर्व में चम्पारण जिला अवस्थित है।

पश्चिम चम्पारण जिला का मुख्यालय बेतिया है। बेतिया शब्द ब्रात्य शब्द के समरुप प्रतित होता है।

बुद्धकालीन गणतंत्र के साक्ष्य भी चम्पारण से मिलते हैं। आधुनिक बिहार प्रान्त के चम्पारण तथा मुजफ्फरपुर जिले के बीच बुली गणराज्य अवस्थित था। बुलियों का वेठद्वीप (बेतिया) के साथ घनिष्ठ संबंध था। संभवतः यही इसकी राजधानी थी। बुलि लोग बौद्ध धर्म के अनुयायी थे। बुद्ध की मृत्यु के बाद उनके अवशेष प्राप्त कर उन्होंने उस पर स्तूप का निर्माण किया।

भौगोलिक समानता के अनुरुप अध्ययन करने पर कुछ बातें स्पष्ट होती है कि बेतिया की अवस्थित पश्चिम में गड़क नदी और बुढ़ी गड़क नदी के बीच स्थित है। यह क्षेत्र हिमालय के तराई का भाग था। बेतिया का नाम तराई क्षेत्र में उत्पन्न होने वाले बेंत के नाम पर पड़ा है। इस क्षेत्र में बौद्ध स्तूप की विद्यमानता है। केसरिया में सबसे ऊँची बौद्ध स्तूप पाई गई है। दूसरा बौद्ध स्तूप लौरिया नंदनगढ़ में पाया गया है। इस क्षेत्र में बौद्ध स्तूप का पाया जाना इस बात को स्पष्ट करता है कि यह क्षेत्र बौद्ध धर्म मानने वालों का रहा था।

बुद्ध काल के पश्चात् मौर्य काल में इस क्षेत्र की विशिष्ट स्थिति रही है। अशोक कालीन स्तंभ यहाँ मिले है जो भिन्न–भिन्न पाषाण स्तंभों पर उत्कीर्ण पाये गये हैं। जो है –

1. लौरिया नन्दनगढ़ : बिहार के चम्पारण जिला में स्थित है।
2. रामपुरवा : बिहार के चम्पारण जिला में स्थित है।

अतः इससे चम्पारण क्षेत्र का महत्त्व स्पष्ट होता है। सबसे बढ़कर मौर्य वंश का वंशीय चिन्ह 'मयूर' का उत्कीर्ण लौरिया नंदनगढ़ स्तम्भ से ही होता है। इसके अलावा अन्य किसी स्तंभ से 'मयूर' की आकृति प्राप्त नहीं होती है। अतः मौर्यकाल में भी इस स्थल का महत्त्व था।

ये सभी पुरातात्विक स्थलों का उत्खनन नहीं हो पाया है। इन क्षेत्रों के उत्खनन होने पर कई अन्य जानकारी प्राप्त होने की संभावना है जो प्राचीन काल से लेकर आधुनिक काल में चम्पारण के महत्त्व को उजागर करेगा।

REFERENCES :-

1. Le Huuphuoc, Buddhist Architecture, Grafikal 2009
2. Ray, Niharranjan(1975) Maurya and Past Maurya Art: Astudy in Social and formal contracts.
3. महावंश टीका
4. अर्थववेद
5. शतपथ ब्राह्मण
6. महापरिनिर्वाण सूत्र